जनाबे ज़ैनब का ज़ुल्म–तोड़ जवाब

मु0 र0 आबिद

अन्धी शाम.......अन्धड़ों की राजधानी. ....अन्धेर का अन्धेरा दरबार......बरसाती कीड़ों से बजबजाती चौपाटी,

चौपट राजा...............झूठ के नशे में धुत्त, बेसुध, पापों से चकनाचूर ज़ुल्म का गुरुघन्टाल, अत्याचार अनर्थ करते करते थका हारा, लूला लंगड़ा, काला–कलूटा, क़िस्मत फूटा.................,

और सामने रस्सी में जकड़ा मानवता, शराफ़त, सचाई का लुटा हुआ क़ाफ़ला, रौशनियों का रखवाला, धर्म का पालनहारा.............,

हवाएँ थमी हुई, सुनसानियाँ छायी हुयीं, Nature उदास, धुवाँ–धुवाँ...........काली गद्दी से नशीली आवाज़ गूँजती है.............धर्म ईमान की खिल्ली उड़ाती, इन्सानियत की हंसी उड़ाती, हंस की चाल दिखाती............ तो,

घुटन बढ़ चुकी है, न्याय सिसक रहा है........... कहीं आसमान फट न पड़े...... ....कहीं ज़मीन धंस न जाये.............. कहीं क़यामत न आ जाये..........

ऐसे में एक जियाली ललकार बढ़कर ताक़त की कलाई मरोड़ देती है, (धर्म के जान में जान आती है, और इन्सानियत के साँस में साँस).........

पहचाना! लल्कार कौन है? वही सच्चे रसूल की अमानतदार नवासी, इस्लाम और रसूल के उसूलों की रखवाली ज़ैनब अली की ज़बान में, माँ की शान से, दादा की आन से बोल रही है:–

सारी हम्द, संस्तुति, तारीफ़ संसारों के पालने वाले अल्लाह के लिए है। उसके भेजे हुए रसूल और उनकी आल पर सलवात। ख़ुदा ने सच कहा है, "फिर जो बुराई करते थे, ख़ुदा की निशानियों (प्रतीकों) को झुटलाते थे और उनकी खिल्ली उड़ाते थे उनका बुरा ही अन्जाम हुआ।" ऐ यज़ीद, तू किस हवा में है? तूने हम पर ज़मीन के रास्ते और आसमान के फैलाव बन्द कर दिये, हम औरतों को बन्दी कर फिराया, तो क्या तू इस ख़याल में है कि हम ख़ुदा के नज़दीक ज़लील हो गये और तू उसके नज़दीक बड़ा हो गया। तूने जो हम पर यह ज़ुल्म ढाया तो क्या सोचता है कि तुझे उसके आगे शान और ऊँचाई मिल गयी!! तू इस फेर में घमंडी की तरह घूर रहा है, ख़ुशी से बाहें मटका रहा है, इतरा–इतरा कर ट्विस्ट (Twist) कर रहा है। तू इस बात पर फूले नहीं समाता कि तूने दुनिया को अपने लिए बराबर कर लिया है, अपने काम ठीक कर लिये हैं और तुझे हमारी राजसत्ता बेखटके मिल गयी है। जल्दी न कर, ज़रा दम तो ले। क्या तू यह भूल गया है कि ख़ुदा (कुर्आन मजीद में) कहता है कि "यह हरगिज़ न सोचो कि मैंने काफ़िरों को मुहलत दे दी है, और उन्हें जो कुछ यह ढील है वह भली है, बल्कि हम उस गुट को लम्बे समय तक छोड़ रखते हैं ताकि उनका गुनाह और बढ़े

और उनके लिए तो नीचा ज़लील करने वाला अज़ाब है। (3–175)

ऐ तुलक़ा[1] (छोड़े गये दास/गुलाम) की औलाद! क्या यही तेरा न्याय इन्साफ है कि तूने अपनी औरतों और (यहाँ तक) अपनी लौंडियों को पर्दे में रखा और रसूल की बेटियों को बन्दी बनाकर घुमाया, उनका मान मिटाया, उन्हें बेपर्दा कर दिया। उन्हें दुश्मनों ने एक शहर से दूसरे शहर फिराया है। लोग उनके चेहरों को देखते हैं और पास व दूर के शरीफ व कमीने (ऐरे–ग़ैरे) लोग उनके गालों को घूर–घूर कर तकते हैं, उस पर यह मुसीबत यह है कि इन बेचारों के आड़े आने वाला कोई रखवाला मर्द भी नहीं है। हाँ, उससे रियायत की क्या उम्मीद की जाय जिसके पुरखों[2] के मुँह ने पाक लोगों का जिगर चबा के थूका हो और जिसकी खाल, गोश्त, शहीदों के ख़ून से पली–पोसी हो!! क्यों यह हालत न हों! जो हमें बैर, नफ़रत जलन से देखता है, वह बैर करने में क्यों कमी करेगा। ऐ यज़ीद फिर तू गुनाह और बड़े मामले की परवाह न करके अपने पुरखों को याद करके कह रहा है कि वे मेरे पास आकर यह मन्ज़र देखकर ख़ुशी से उछल पड़ते और कह उठते कि ए यज़ीद तेरा हाथ कभी न शल (बेकार) हो'' जबकि तू जन्नत के जवानों के सरदार इमाम हुसैन (अ0) के दाँतों से बेअदबी कर रहा। ऐ यज़ीद! तू क्यों न ख़ुश हो और ऐसी बातें क्यों न कहें क्योंकि तूने घाव को गहरा कर दिया है और पाक पौधे को जड़ से उखाड़ फेंका है यानी मुहम्मद (स0) की पाक औलाद का ख़ून बहाया है। और मुहम्मद (स0) की आल (औलाद) और अब्दुलमुत्तलिब की सन्तान के उन लोगों को जो ज़मीन पर तारों के समान थे मार डाला है और अपने पुरखों को इस पर पुकारता है। बस तू बहुत जल्दी उनसे मिल जायेगा। और उस समय तू आरज़ू करेगा कि काश! दुनिया में तेरे हाथ ही न होते और न ही तेरी ज़बान कि जो कुछ किया न करता और जो कुछ कहा न कहता। *फिर जनाबे ज़ैनब ने आसमान की ओर मुँह उठाकर कहा:–* मेरे ख़ुदा! हमारे हक़ का बदला ज़ालिमों से ले और हम पर सितम करने वालों से तू ही ख़ुद बदला ले। जिस जिस ने हमारा ख़ून बहाया, और हमारे जवानों को मार डाला उस उस पर अपना ग़ज़ब (प्रकोप) ढा। ऐ यज़ीद, ख़ुदा की क़सम जो तूने बेइन्साफी की (और बुरा किया है) वह अपने ही साथ किया, तूने अपनी ही खाल फाड़ी है और अपना ही गोश्त काटा है। तू रसूल (स0) के सामने मुजरिम की तरह लाया जायगा कि तूने उनकी सन्तान का ख़ून बहाया है और उनकी औलाद का मान मिटाया है। उस समय ख़ुदा उनकी परेशानी को दूर कर देगा, उनकी बेकली को सुकून चैन में बदल देगा और सताने वालों से उनका बदला लेगा। तू यह हरगिज़ न सोच कि ख़ुदा के रास्ते में मारे जाने वाले मुर्दा हैं बल्कि वे ज़िन्दा हैं और अपने पालने वालो से रोज़ी जीविका पाते हैं।[3] और फिर ख़ुदा का इन्साफ (जजी) करना, रसूल (स0) की दावेदारी और जिब्रईल की पैरोकारी तेरी सज़ा के लिए काफी है। जिसने तेरे राज़ को बराबर किया और तुझे मुसलमानों के सरों पर थोपा वह जल्दी ही जान जायगा कि ज़ालिमों का (खोट करने वालों का) का क्या बुरा बदला मिलता है और तुम लोगों में किसका ठिकाना बुरा है और किसके साथी और

कुमक करने वाले कमज़ोर और हल्के (बेकार) हैं। और हालाँकि इस जीवटपन और बेबाकी से तेरे मुँह लगना मुझको ख़ुद दुख दे रहा है, सता रहा है फिर भी मैं तो तुझे तुच्छ, कम्बख़्त ही समझती हूँ और जो तू हमें सता रहा है और बुरा बर्ताव कर रहा है उसे बहुत बड़ा समझती हूँ। दुख है कि आँखें रोती हैं और सीने दुख से भुन रहे हैं। हैरत है ख़ुदा का दल शैतान के हाथों मार डाला गया, दुश्मनों के हाथों से हमारा ख़ून अब तक टपक रहा है और उनके मुँह से हमारे गोश्त की बिसान्द आ रही है, और जंगली भेड़िये उन पाक जिस्मों पर मण्डला रहे हैं। ऐ यज़ीद! अगर हमें उजाड़ने में ही तूने ग़नीमत (लूट का माल) पाया है, तो कल क़यामत के दिन तू सिरे से घाटे में पड़ेगा जब अपने बुरे कामों को छोड़ कर तेरे हाथ कुछ न लगेगा। ख़ुदा (अपने) बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। ख़ुदा से ही शिकायत फरयाद है और उसी पर भरोसा है। ऐ यज़ीद! जितना छल मक्कारी करना चाहे कर ले और अपने जतन से बाज़ न आ और जितना सताना है सता डाल लेकिन ख़ुदा की क़सम तू हमारी याद हमारी चर्चा को मिटा नहीं सकता और न ही तू अपनी बदनामी को धो सकता है। तेरी राय, तेरी सोंच तो बस फुसफुसी और ढीली है, तेरे दिन तो बस गिनती के हैं। तेरी पूँजी उस दिन तो परेशानी बेचैनी के सिवा कुछ न होगी जब पुकारने वाला आवाज़ लगायगा, ''हाँ हाँ ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत (फिटकार–धितकार)''।

ख़ुदा की तारीफ है (शुक्र है) जिसने हमारे पहले पर भलाई और हमारे आख़री पर शहादत की मुहर लगायी (यानी उन पर ख़त्म कर दी)। मैं ख़ुदा से यह दुआ माँगती हूँ कि उनका (हमारे शहीदों) का सवाब पुण्य पूरा कर और उनके बदले को बढ़ा दे (भाव बढ़ा दे)। हम में जो (ज़िन्दा) बच रहे उन का भला कर। वह तो दया वाला, मेहरबान और चाहने वाला है। हमें तो अल्लाह ही काफी है जो अच्छा वकील है।

और फिर चारों ओर हू का सन्नाटा छा गया........

अन्धेर नगरी का चौपट राजा चौपाट (Flat) हो चुका, चुप्पी साध चुका था.......

सितम के थके हारे हाथों में हथकड़ियाँ पड़ चुकी थीं.........

पापों के पैरों तले से ज़मीन निकल चुकी थी..........

ज़ुल्म की नींव खोखली हो रही थी

इतराता हुआ घमण्ड सिस्कियाँ ले रहा था.......

और करता भी क्या?

नाचते इतराते अन्धेरे की धज्जियाँ उड़ रही थीं।

और............

सच सच्चाई चैन की चादर तान चुकी थी।

नबियों की मेहनतें दुआएँ दे रही थी।

इस्लाम के माथे का पसीना शाबाशी दे रहा था।

(1) रसूल (स0) ने मक्का जीतने के दिन यज़ीद के दादा अबुसुफयान को यह कहकर छोड़ दिया था कि जाओं तुम अब छोड़े गये गुलाम हो।

(2) यज़ीद की दादी ने बद्र की लड़ाई में होने वाले शहीद जनाब हमज़ा (रसूल स0 के चचा) का जिगर चबाया था।

(3) कुर्आन मजीद